अक्रम यूथ

दिसम्बर २०१६ | हिन्दी दादा भगवान परिवार ₹ १२

खानदानियत

Dada's Youth Network

अनुक्रमणिका

०४	लोगों के अभिप्राय
०६	दादा श्री के पुस्तक की झलक
०८	टाटा कंपनी की खानदानियत
१२	"नोबल" किसे कहेंगे?
१४	आप्तसिंचन के साधक का अनुभव
१६	खानदानियत मेहमानगति
१७	Q & A
१८	ज्ञानी आश्चर्य की प्रतिमा
२०	ज्ञानी विद यूथ
२२	Puzzle
२३	खानदानियत की ओर पहली पायदान

संपादक : डिम्पल मेहता
वर्ष : ४, अंक : ८
अखंड क्रमांक : ४४
दिसम्बर २०१६

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr. RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar
कुल २४ पेज कवर पेज सहित

सदस्यता शुल्क
वार्षिक
भारत : १२५ रुपए
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड

पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/M.O. महाविदेह फाउन्डेशन के नाम पर भेजों

ऑनलाइन सबस्क्राइब करने के लिए...
store.dadabhagwan.org/akram-youth

You need to download
QR Code Scanner App
from Play store
or iTunes Store

Download free ebook / PDF versions of all Akram Youth issues by scanning this QR code

संपादकीय

राजा-रानी की बातों में हमें बहुत मज़ा आता है। हर एक बच्चा राजकुमार-राजकुमारी बनने का सपना देखता है। हम जैसा बनने का सपना देखते हैं, ऐसे अति संपन्न राजाओं और धनवान लोगों के DNA *में क्या होता होगा? साधारण भाषा में उसे "खानदानियत" गुण कहते हैं।*

दादा श्री ने "खानदानी" शब्द की बहुत अच्छी समझ दी है और वास्तव में "खानदानियत" या "नोबल" किसे कहते हैं, वह समझाया है। इस अंक को पढ़कर हम खानदानियत गुणों के विचार और वास्तव में खानदानियत गुण, दोनों के बीच का फर्क दूर करेंगे। लंदन की रानी की बात! एक दुर्घटना के बाद भारतीय कंपनी ने अपने कर्मचारियों की मदद की ! आप्तसिंचन के साधक का अनुभव! और दूसरा बहुत कुछ पढ़कर "खानदानियत" गुणों को विस्तार से समझेंगे।

तो चलिए, इस अद्‌भुत सफर पर निकलें...

"खानदानियत" गुण आपके साथ रहें ऐसी प्रार्थना के साथ....

- डिम्पल मेहता

लोगों के अभिप्राय

मित्रों, आपके मतानुसार "खानदानियत" क्या है? नीचे दी गई परिस्थितियों में आपके मतानुसार "खानदानियत" किसे कहेंगे, वह सोचो...

१. "खचाक" - काँच (शीशा) टूटने की आवाज़ सुनते ही मिता बहन बाहर आई और गुस्से से बोली, "शॉट मारकर किसने हमारा नुकसान किया?" मिहिर ने तुरंत आगे आकर कहा, "आन्टी, काँच मुझसे टूटा है।" आन्टी को स्तब्ध देखकर उसने कहा, "आन्टी, मेरी गलती हो तो मुझे स्वीकार कर लेना चाहिए न?"

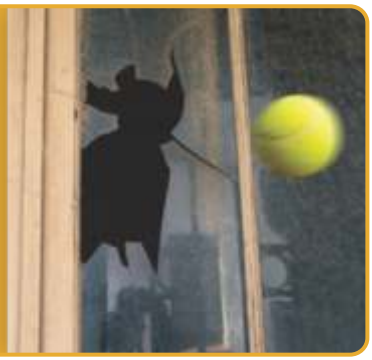

- क्या यह मिहिर की खानदानियत कहलाएगी? ☐ ***हाँ*** ☐ ***ना***

२. चिन्टू बिस्किट लेकर घर आया, उसके बाद उसने देखा कि दुकानदार ने ७० रुपए के बजाय ८० रुपए वापस दिए हैं। उसे लगा कि, "हम किसी से ज्यादा पैसा कैसे ले सकते हैं?" तुरंत वापस जाकर उसने पैसे लौटा दिए।

- क्या यह चिन्टू की खानदानियत कहलाएगी? ☐ ***हाँ*** ☐ ***ना***

३. मेहता साहब की कैबिन में सुरेश मुँह लटकाकर खड़ा था। उसकी एक छोटी सी गलती से कंपनी का लाखों रुपए का नुकसान हुआ था। ऑफिस में सभी को ऐसा लग रहा था कि आज तो सुरेश की छुट्टी हो जाएगी। मेहता साहब ने कहा, "सुरेश! गलती तो सभी से हो जाती है। ज्यादा दुःखी मत हो। अब से हम और ज्यादा ध्यान रखेंगे।"

- क्या यह मेहता साहब की खानदानियत कहलाएगी?

☐ ***हाँ*** ☐ ***ना***

४. रमेश भाई का व्यापार में बहुत ज्यादा नुकसान हुआ था। जब उनके दोस्त उनसे मिलने आएँ तब उन्होंने नुकसान के बारे में एक भी बात नहीं की, जबकि इस विषय पर बातें की, कि दोस्त का व्यापार में व परिवार में कैसा चल रहा है?

-क्या यह रमेश भाई की खानदानियत है? ☐ ***हाँ*** ☐ ***ना***

५. महेश अपना खोया हुआ पेन ढूँढ रहा था। इतने में सुरेश वहाँ आकर उसकी मदद करने लगा। पेन मिलते ही सुरेश ने बहुत सफाई से पेन को जेब में सरका दिया। फिर महेश से कहने लगा, सॉरी यार, मिल नहीं रहा। मुझे काम है इसलिए मैं जा रहा हूँ।

- क्या यह सुरेश की खानदानियत है? ☐ हाँ ☐ ना

६. पानी की तंगी के कारण मितेश भाई ने जब बगल में रहने वाले विष्णु भाई से कहा, "हमारे बोर में पानी बिल्कुल खत्म हो गया है। दो दिनों के बाद नया बोर बनेगा। तब तक के लिए क्या आप हमें थोड़ी हेल्प करेंगे? विष्णु भाई ने कहा, "हमारे बोर में भी पानी खत्म हो गया है।" मितेश भाई के जाने के बाद विष्णु भाई ने अपने नौकर से कहा, "देख, हमारे बोर से कितना पानी निकल रहा है। पाइप लेकर आ और धो दे अपनी गाड़ी"।

- क्या यह विष्णु भाई की खानदानियत है? ☐ हाँ ☐ ना

७. छोटे मयूर को उसकी सोसायटी में रहने वाले कॉलेज के कुछ शैतान लड़कों ने कहा, "जा मयूर, उन चाचा जी के चप्पल छूपा दे। जब चाचा जी ढूँढेंगे, तब बड़ा मज़ा आएगा।" मयूर ने कहा, "हमें ऐसा गलत काम नहीं करना चाहिए। मैं ऐसा नहीं करूँगा।"

- क्या यह मयूर की खानदानियत है? ☐ हाँ ☐ ना

८. १२ साल के चिन्टू ने देखा कि बगल में रहने वाले रमण चाचा दो भारी थैले उठाकर आ रहे हैं। चिन्टू ने तुरंत जाकर चाचा को हेल्प की। चाचा ने खुश होकर कहा, "ले बेटा, यह १० रुपए, चॉकलेट खा लेना।" चिन्टू इनकार करते हुए बोला, "चाचा, मैं पैसे नहीं लूँगा" और खेलने चला गया।

- क्या यह चिन्टू की खानदानियत है? ☐ हाँ ☐ ना

जवाब - १. हाँ, २. हाँ, ३. हाँ, ४. हाँ, ५. ना, ६. ना, ७. हाँ, ८. हाँ

दादा श्री के पुस्तक की झलक

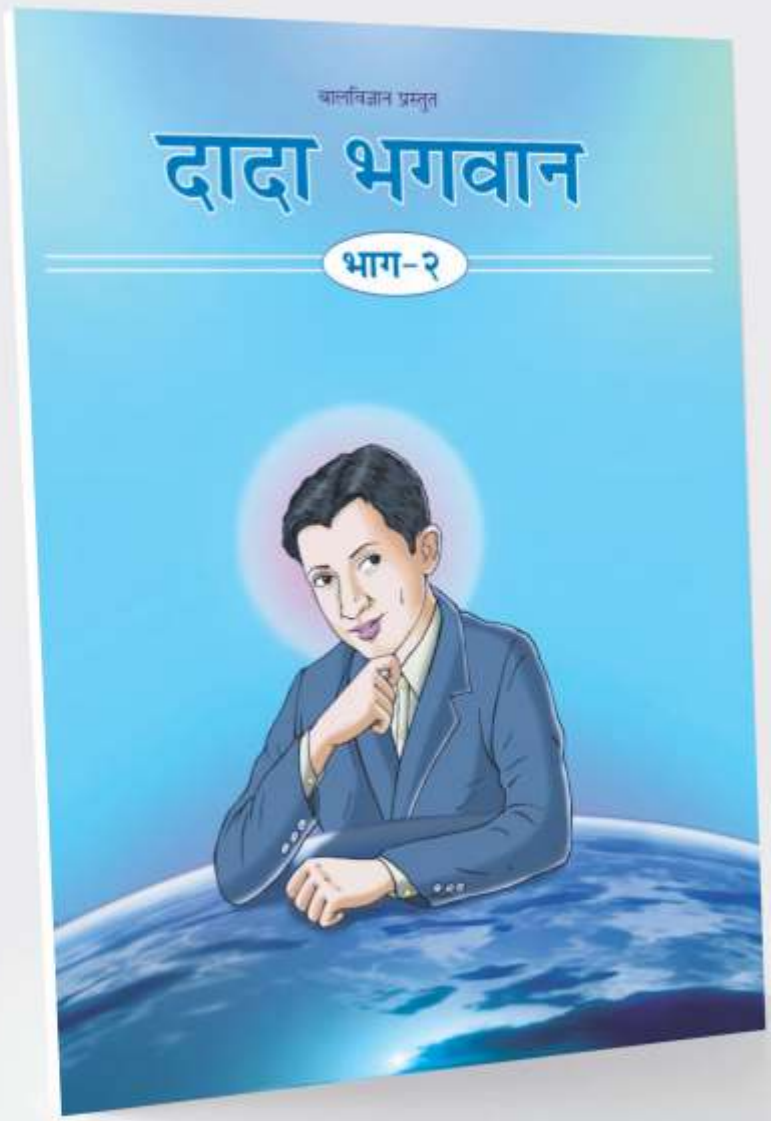

दादाश्री : "अब नोबल किसे कहें? जैसे लकड़े को काटते वक्त करवत दोनों तरफ बुरादा बिखेरती है, वैसे ही किसी व्यक्ति को पैसा लेते समय सामने वाली व्यक्ति ठग ले, तब और पैसा देते समय बेचारे को दुःख होगा ऐसा सोचकर जितने देने हों उससे थोड़े ज्यादा देकर खुद ठगा जाए, यानी दोनों तरफ से धोखा खाता है। उसे खानदानियत कहते हैं, वह नोबल कहलाता है।"

You need to download QR Code Scanner App from Play store or iTunes Store

Download free ebook version of above Book by scanning this QR code

Visit
https://goo.gl/P7DwTP

अंबालालभाई का एक अनोखा गुण था। किसी के मानने में न आए ऐसा। वे जान-बूझकर धोखा खाते थे। उनकी माताजी झवेरबा के व्यवहार का निरीक्षण करके उनके पास से, वे यह गुण सीखे थे। कभी कुछ खरीदने, गए तो भाव-ताव नहीं करते थे। एक बार, एक चाचा के लिए धोती खरीदने के लिए गये।

अंबालालभाई का प्रिन्सिपल था कि दोनो तरफ से जान-बूझकर धोखा खाना। बाकी कोई उन्हें मूर्ख बना जाए, धोखा दे जाए, उस बात में कुछ दम नहीं था। ऐसा करने से उनकी बुद्धि बहुत विकसित हो गई। बड़े-बड़े जजों की बुद्धि काम न करे, ऐसे उनकी बुद्धि काम करती थी। खुद जान-बूझकर धोखा खाकर भी दूसरो को सुख-संतोष देना, यह कैसी नोबिलिटी थी!

टाटा कंपनी की खानदानियत

"२६ नवम्बर के दिन मुंबई में किया गया आतंकवादी हमला मेरे लिए जीवन परिवर्तन करने वाली घटना थी।" टाटा ट्रस्ट के चेयरमैन श्री रतन टाटा के शब्द...

" अगर मैं मेरे जीवन का चित्रपट देखूँ तो, मुंबई के आतंकवादी हमले में कई लोगों की जान गई, वह मेरे लिए जीवन परिवर्तन की क्षण थी। लगभग छः महीने तक मेरी आवाज़ काँपती थी और अभी मैं जितना स्पष्ट बोल सकता हूँ, तब ऐसा नहीं बोल पाता था।"

"रोज़ शाम को मैं हमले में घायल लोग और उनके परिवार वालों को होस्पिटल में मिलने जाता था। मैंने देखा कि तीन दिनों तक उनकी सारवार के लिए पैसे देने वाला कोई नहीं था। उन्होंने कहा कि हमने पहचान वाले और अनजाने असरग्रस्त लोगों के स्वास्थ्य के लिए (रीहबिलिटेशन) ट्रस्ट बनाया है।" उन्होंने साथ में यह भी कहा कि, "इस हमले ने मुझे और भावुक बना दिया।"

हमारे देश की अन्य कंपनियों से टाटा कंपनी किस तरह अलग लगती है? उनकी खानदानी मात्र शब्दों में नहीं बल्कि वर्तन में दिखाई देती है। २६ नवम्बर के दिन मुंबई के "टाटा ग्रूप" की प्रसिद्ध "ताज होटल" पर आतंकवादी हमला होने के बाद, लोग डरे हुए और घबराए हुए थे। तब टाटा कंपनी ने लोगों के लिए आवश्यक काम किए उपरांत अन्य बहुत से लाभदायक कार्य भी किए, जिससे असरग्रस्त लोगों ने हलकापन (आराम) महसूस किया।

टाटा ग्रूप द्वारा किए गए उमदा कार्यों में से कुछ यहाँ लिखे गए हैं -

- २६ नवम्बर के हमले के बाद, जितने दिनों तक होटल बंद रही उतने दिन सभी कर्मचारियों की हाज़िरी लगाई गई। इसमें, उसी दिन काम में लगने वाले नए लोगों को भी शामिल किया गया।

- जो घायल हो गए थे या जिनकी मृत्यु हो गई थी उनके परिवार वालों को सहायता और व्यवस्था दी गई।

- जिनकी रेलवे स्टेशन पर मृत्यु हुई थी या होटल के आसपास वाले पाँव-भाजी या पान के गल्ले वाले को भी यह राहत दी गई।

- मरम्मत के लिए होटल कुछ समय तक बंद रही, फिर भी मनी-ऑर्डर द्वारा कर्मचारियों को वेतन दिया गया।

- "टाटा इन्सटिट्यूट ऑफ सोशल साइन्सीज" के सहयोग से एक "साइकिएट्रीक सेल (मानसिक सहाय केन्द्र)" की स्थापना की गई, ताकि जिसे भी सहायता की ज़रूरत हो, उसे सहायता मिल सके।

- विचारों और चिंता में उलझे हुए, भयभीत असरग्रस्तों के साथ निरंतर संपर्क करके, जब भी उन्हें ज़रूरत थी तब साइकिएट्रीक मदद की गई।

- "एम्प्लॉई आउट रीच सेन्टर" स्थापित किए गए, जहाँ से कर्मचारियों को जीवन ज़रूरियात की सभी चीज़ें मिल सकें, जैसे कि खुराक, पानी, प्राथमिक सारवार, स्वच्छता और आरोग्य-संबंधी सामान वगैरह। साथ ही बातचीत करके उन्हें सलाह भी दी जाती। इस केन्द्र का लाभ लगभग १६०० कर्मचारियों को मिला।

- हर एक कर्मचारी के लिए एक व्यक्तिगत मार्गदर्शक (मेन्टर) की नियुक्ति की गई और उस मार्गदर्शक को "अपनी तरह से", कर्मचारी की ज़रूरत पूरी करने के लिए "सिंगल विन्डो" के तौर पर हक दिया गया।

- खुद रतन टाटा जाकर हमले के भोग बने हुए सभी (८०) कर्मचारियों के परिवार वालों से मिले।

- कर्मचारियों पर निर्भर परिवार वालों को विमान द्वारा बुलाकर, उनकी देखरेख की गई।

- टाटा ने लगभग २० दिनों के कम समय में, कर्मचारियों को मदद करने के लिए ट्रस्ट की स्थापना की।
- आश्चर्य की बात तो यह है कि, टाटा ने हमले के भोग बने हुए रेलवे कर्मचारी, पुलिस कर्मचारी और उन मुसाफिरों को जिनके साथ टाटा का कोई संपर्क नहीं था, उन्हें भी मुआवज़ा दिया। हर एक को १०,००० जैसी बड़ी रकम छः महीनों तक पहुँचाई।

- एक व्यापारी की ४ साल की पोती को ४ गोलियाँ लगी थीं और सरकारी होस्पिटल में उनमें से एक ही गोली निकाली गई थी। इस बच्ची की आगे की संभाल बोम्बे होस्पिटल में की गई और उसका पूरा खर्च टाटा ने उठाया।

- टाटा ने असरग्रस्त लोगों के ४५ से अधिक बच्चों की पढ़ाई की ज़िम्मेदारी उठाई।

- संस्था के लिए यह सब से ज्यादा मुसीबत का समय था। रतन टाटा और अन्य उच्च कक्षा के बड़े मैनेजर, निरंतर तीन दिनों तक, एक के बाद एक स्मशानयात्रा में शामिल हुए।

- हर एक असरग्रस्त व्यक्ति के लिए नियुक्त की गई मुआवज़े की रकम ३५ लाख से ८५ लाख रुपए की थी। इस मुआवज़े के साथ दी गई व्यवस्था इस प्रकार थी :

- परिवार वालों और उन पर निर्भर व्यक्तियों को जीवनपर्यंत पूरा वेतन।

- निर्भर व्यक्तियों के बच्चों की पढ़ाई की ज़िम्मेदारी।

- पूरे परिवार और निर्भर व्यक्तियों के लिए जीवनपर्यंत तबीबी देखरेख की सुविधा।

- लोन और एडवान्स की पूरी रकम माफ, चाहे जितने रुपए लिए हों।

- किसने, किस चीज़ ने रतन टाटा से ये सब करवाया? शायद, वह उनके खून में था। नई भाषा में कहें तो उनके DNA *में था। उनके पूर्वज, जमशेद जी टाटा ने हमारे देश में कई संस्थाओं की स्थापना की जो कि पूरे देश के विकास, संस्कृति और आधुनिकरण के लिए कीर्तिस्तंभ समान बन गई। ऐसे* DNA *को* ***"खानदानियत"*** *कहते हैं।*

चलो, एक क्षण के लिए इस भयानक घटना का भोग बनी हुई व्यक्तियों को याद करके श्रद्धांजलि दे। फिर दूसरे क्षण में टाटा ग्रूप और उनके जैसी संस्थाओं को सराहना दे।

Akram Youth Subscription Form

Full Name : ____________________

Address : ____________________

City : ________ State : ________ Country : ________

Pincode : ________ Phone : ________

E-Mail : ________ Date of Birth : __/__/____ dd/mm/yyyy

Gujarati ☐ English ☐

1 Year	₹ ~~125~~	₹ 75	☐
5 Year	₹ ~~500~~	₹ 300	☐

D.D/M.O. should be in favour of **'Mahavideh Foundation'**, payable at Ahmedabad.

Please enclose payment or pay by credit card online at : store.dadabhagwan.org/akram-youth

Send this form and enclosed payment to

Akram Youth
'Dada Darshan', 5, Mamta Park Society, B/h. Navgujarat college, Usmanpura, Ahmedabad - 380 014, Gujarat, India.

We would love to hear from you.
Send us your feedback and suggestions.
Email: **akramyouth@dadabhagwan.org**

"नोबल" किसे कहेंगे?

खानदानियत *इंसान से कुछ गलत हो ही नहीं सकता। कुछ भी गलत नहीं करे, उसी को कहते हैं* ***खानदानियत****। जो कोई भी लोकनिंद्य कार्य नहीं करता, उसे कहते हैं* ***खानदानियत****। जो* ***खानदानियत*** *होता है, उससे कोई भी लोकनिंद्य कार्य हो ही नहीं पाता।*

आप अच्छे व्यक्ति हैं और अगर आप ठगे नहीं जाओगे तो और कौन ठगा जाएगा? नालायक तो ठगा नहीं जाता, उसका तो ऐसा है कि, साँप के घर साँप गया और जीभ चाटकर वापस आया।" अगर ठगे जाएँ तभी हमारी ***खानदानियत*** *कही जाएगी न!*

जो रोकर खुद के दुःख दूसरों को बताए, क्या वह ***खानदानियत*** *कहलाएगा? लेकिन लोग तो सभी को दुःख बताते फिरते हैं। दुःख बताने की शक्ति हो फिर भी सहन करना और किसी से नहीं कहना, वह खानदानियत कहलाती है। बड़ा आदमी खुद के दुःखों को पी जाता है।*

रिश्वत लेनी चाहिए? रिश्वत नहीं लेनी चाहिए। वह तो खानदानियत है।

घर में चाहे कैसे भी वातावरण में खुद सहन कर ले और टकरावों में भी क्लेश न करे, आग बबूला न हो जाए, उसे ही खानदानियत कहा है। वहीं भगवान का वास होता है!

*कुछ सत्कार्य करें और फिर सब से कह दें कि, "मैंने किया", तो **खानदानियत** नहीं रहती।*

*जहाँ अकड़ने की स्थिति है वहाँ नम्र रहे, उसे **खानदानियत** कहते हैं। जैसे-जैसे विशेष नम्रता आती जाती है वैसे-वैसे खानदानियत बढ़ती जाती है।*

दो गुण- "एक नामकर्म अच्छा होना चाहिए और दूसरा भाव अच्छे होने चाहिए।" तो हम जान जाएँगे कि असल खानदानियत हैं। हाँ, दोनों ही गुण हों तो खानदानियत पहचानी जाती है।

आप्तसिंचन

आप्तसिंचन के साधक का अनुभव

आप्तसिंचन का कोर्स शुरू हुआ, लगभग २ महीने हुए होंगे। ये दो महीने मेरे लिए बहुत आनंददायक रहें। रोज़ सुबह छः बजे उठना, नियमित भोजन लेना, अक्रम विज्ञान के उत्तम सेशन्स, आप्तपुत्र के साथ नियमित वार्तालाप, नए साधक मित्र और नया ही जीवन। ये सब मेरे अंदर नई उर्जा भर रहे हों और मुझे नया जीवन मिला हो ऐसा लगता था। मेरे पसंद किए गए जीवन के लिए मैं बहुत खुश और उत्साहित था। अक्रम साधक के तौर का जीवन बहुत आनंददायक है। मैं सोचने लगा कि "अगर मेरे ये दो महीने ऐसे रहे हैं, तो इस कोर्स के आने वाले तीन साल कितने अच्छे होंगे और कितना ज्ञान प्रदान करने वाले होंगे।

लेकिन, हर एक क्षण मज़ेदार होने के बावजूद, मेरे दिल में सवाल उठता था और उससे मुझे इतनी तकलीफ होती थी कि मैं उस सवाल को लेकर सिंचन के आप्तपुत्र फैकल्टी के पास गया। उनसे मैंने अपने दिल की बात कही, "मुझे यह कोर्स नहीं करना है। मैं यह छोड़ना चाहता हूँ।" आप्तपुत्र ने मुझे शांति से पूछा कि, "तकलीफ क्या है?" मैंने कहा कि, "मुझे यह अच्छा नहीं लग रहा है कि मैं यहाँ मज़े कर रहा हूँ, आनंद में रहता हूँ और अक्रम विज्ञान सीखने में समय व्यतीत कर रहा हूँ। दादा भगवान परिवार मेरे रहने का, खाने का और दूसरी ज़रूरी चीज़ों का खर्च उठा रहे हैं और मैं जलसे कर रहा हूँ। मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं तीन साल के लिए वेकेशन पर हूँ और मुझे उसका पगार दिया जा रहा है। मैं इस तरह नहीं जी पाऊँगा। दादा भगवान परिवार मेरा खर्च दे रहा है, सेवा करके मुझे उसे चूका देना है। मैं एक सेवार्थी के तौर पर दादा श्री के मिशन का काम करूँगा, लेकिन यह मुझसे सहन नहीं हो रहा।"

आप्तपुत्र ने मुझे कुर्सी पर बिठाया और कहा, "मैं आपकी बात समझ सकता हूँ। यह खानदानियत अहंकार है। साधारण तौर पर लोग ज्यादा पैसे लेकर कम काम करते हैं। वह अनैतिकता वाले संस्कार है, जबकि खानदानियत लोग यह सह नहीं सकते। आप मेरे पर जितना खर्च करते हैं, उस अनुसार तो मुझे काम करने दो। यह खानदानियत है। नीरू माँ ने कहा था, "चावल के जितने दाने खिला रही हूँ, उतने लोगों का कल्याण करवाऊँगी।" दादा-नीरू माँ हम सभी से जगत् कल्याण करवाएँगे ही। लेकिन दादा-नीरू माँ की भावना के अनुसार अभी तू दादा की वाणी का अभ्यास कर ले। हमें उनकी इच्छानुसार, उन्हें चाहिए वैसा तैयार होना है न?" मैंने उन्हें संपूर्ण एकाग्रता से सुना। "तू सिर्फ दादा से प्रार्थना करके ऐसी शक्ति माँग कि, कब मैं आपकी भावना के अनुसार यह कोर्स पूरा कर लूँ और फिर दिन-रात सेवा करना चाहता हूँ। मैं जगत् कल्याण का निमित्त बनकर आपकी तरह दिन-रात जगत् कल्याण कर सकूँ।"

खानदानियत मेहमानगति

एक बार क्वीन विक्टोरिया लंदन के एक राजकीय रिसेप्शन में थीं। अफ्रिकन समुदाय के एक प्रधान मुख्य अतिथि के तौर पर पधारे थे। भोजन के अंत में फिंगर बाउल दिए गए तब तक भोजन समारंभ ठीक से चल रहा था। मुख्य अतिथि ने फिंगर बाउल कभी नहीं देखा था और ना ही भोजन से पहले उन्हें किसी ने फिंगर बाउल के बारे में बताया था। इसलिए वे बाउल का पानी पी गए।

एक क्षण के लिए ब्रिटिश महानुभाव बिल्कुल मौन हो गए और बाद में वे अंदर-अंदर कानाफूसी करने लगे। लेकिन उस समय सब चूप हो गए जब क्वीन विक्टोरिया ने अपना फिंगर बाउल उठाकर उसका पानी गटागट पी लिया। कुछ ही क्षणों में, ५०० आश्चर्यचकित ब्रिटिश सन्नारियाँ और सज्जन इसी तरह फिंगर बाउल का पानी पी गए।

यह था क्वीन का असाधारण सौजन्य, जिन्होंने उनके मेहमान को इस अपमानजनक परेशानी से बचा लिया।

यह कभी-कभार दिखाई देने वाली, लेकिन बहुत असरकारक मानवीय विशिष्टता है, जो वास्तविक "खानदानियत" उमदा लोग ही दिखा सकते हैं!

Q&A

You have **Questions** We have **Answers**

***प्रश्न** : मैं कॉलेज में पढ़ता हूँ। आते-जाते समय बस में और कॉलेज में कोई छोटे कपड़े पहनी हुई दिखाई दे तो मेरी दृष्टि वहाँ खिंचती है। तो मैं क्या करूँ?*

***उत्तर** : ये गाय-भैंस कहाँ कपड़े पहनकर घूमती हैं। वह भी स्त्री जाति ही है न! वहाँ दृष्टि क्यों नहीं बिगड़ती? यानी स्त्री का दोष नहीं है, तुम्हारी वृत्ति का दोष है। आपकी दृष्टि बिगड़े तो तुरंत ही अंदर आपको "चंदू भाई" से कहना है, "ऐसा नहीं होना चाहिए, हमें यह शोभा नहीं देता। हम खानदानयत क्वॉलिटी के हैं। जैसे हमारी बहन है, वैसे ही वह भी किसी की बहन है! हमारी बहन पर अगर कोई दृष्टि बिगाड़े तो हमें कितना दुःख होगा! ऐसे ही दूसरे को भी दुःख होगा या नहीं? अर्थात् हमें यह शोभा नहीं देता।" यानी दृष्टि बिगड़े तो पश्चाताप करना है। पराई स्त्री पर दृष्टि बिगाड़ना खानदानियत नहीं है। दृष्टि न बिगड़े वह खानदानियत है। अगर अज्ञानदशा में भी खानदानियत का अहंकार नहीं होगा तो खानदानियत की नादारी निकलेगी। हम तो खानदानियत !*

नीरू माँ जब स्कूल और कॉलेज में थीं, तब वे कहती थीं... "हम अमीन परिवार के हैं। लफड़ा नहीं करते।" इस अहंकार के कारण नीरू माँ विषय से बच गई थीं।

खानदानियत इंसान से कुछ गलत हो ही नहीं सकता। कुछ भी गलत नहीं करे, उसी को कहते हैं खानदानियत। जो कोई भी लोकनिंद्य कार्य नहीं करता, उसे कहते हैं खानदानियत। खानदानियत से ऐसा कार्य नहीं होता कि लोग निंदा करें। यदि लोग निंदा करें, फिर भी यदि वह कहे कि "हम खानदानियत हैं", तो वह झूठा खानदानियत कहलाएगा। कोई "एक्सेप्ट" करेगा ही नहीं न! लोग निंदा करें और खानदानियत कहलाए, ये दोनों एक साथ हो ही नहीं सकते न!

ज्ञानी आश्चर्य की प्रतिमा

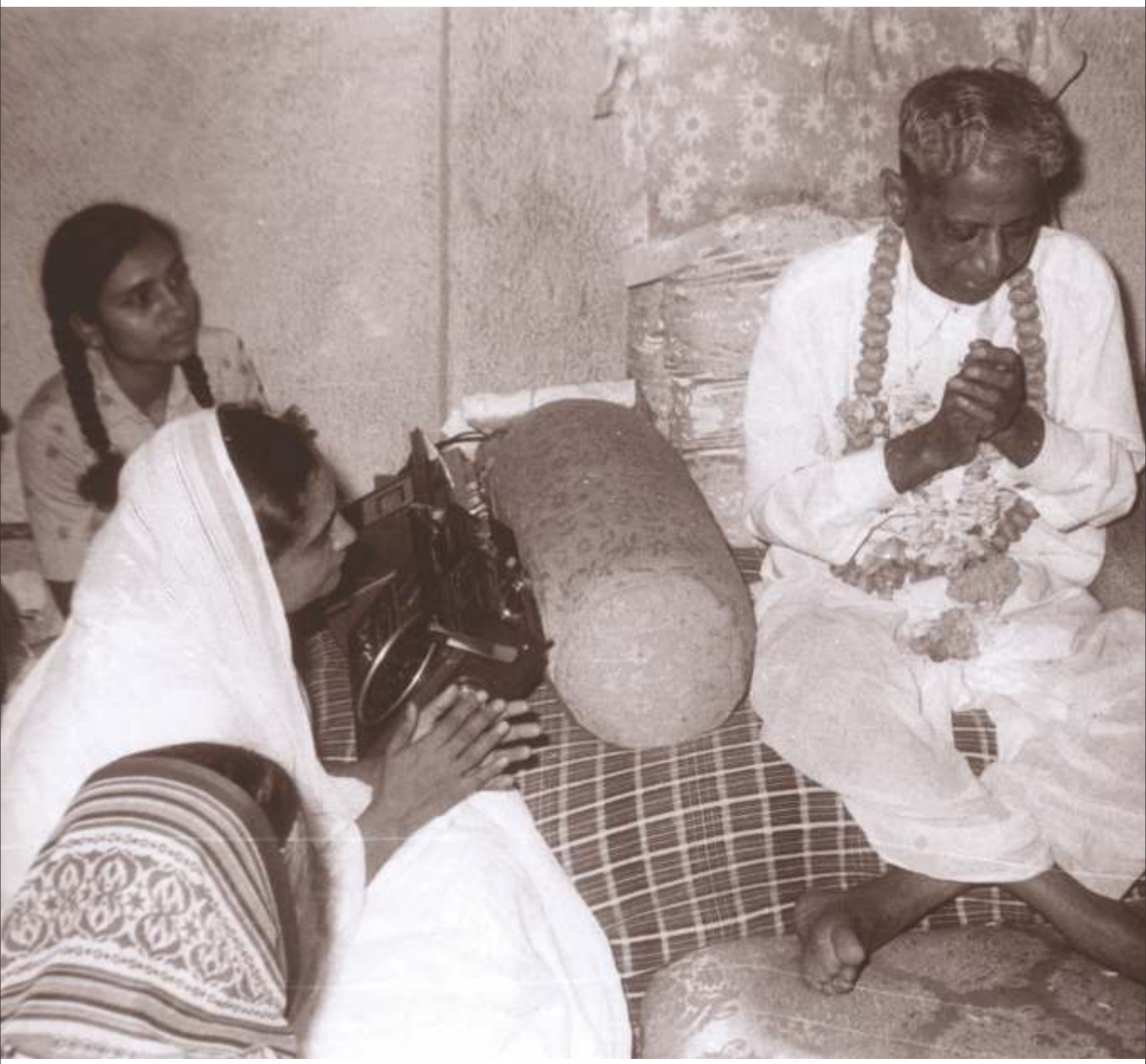

दादा के समय की बात है। तब दादा की तबियत बहुत नाजुक होने के कारण नीरू माँ चौबीस घंटे दादा की सेवा में ही थीं।

नीरू माँ ने एक बात सुनी कि, "नीरू बहन पर कोई बड़ा आक्षेप लगा रहा है।" यह सुनते ही उनके अंदर असर हो गया। अहंकार को ज़बरदस्त ठेस लगी। बाहर तो किसी को पता नहीं चला लेकिन दादा को पता चल गया। दादा ने पूछा, "नीरू बहन, आपको क्या हुआ है? आपके चेहरे पर उल्लास क्यों नहीं दिखाई दे रहा?"

नीरू माँ ने कहा, "नहीं दादा, कुछ नहीं हुआ, सब ठीक है।" नीरू माँ दादा से कुछ कहना नहीं चाहती थीं। नीरू माँ ने ज़िंदगी में कभी भी दादा से किसी भी व्यक्ति की नेगेटिव बात नहीं कही थी। क्योंकि नीरू माँ को दादा की एक बात फीट हो गई थी कि "फरियादी ही गुनहगार"।

"आपको किसी के लिए कम्प्लेन हो, मतलब आपको इस फाइल का समभाव से निकाल करना नहीं आया। आप किसी की फरियाद करेंगे तो मैं फरियादी को ही गुनहगार मानता हूँ।"

लेकिन इस बार दादा के बहुत आग्रह के कारण नीरू माँ ने कहा, "दादा, आज मेरे अहम् को ठेस लगी है"।

दादा ने कहा, "अच्छा! किसके अहम् को ठेस लगी है?"

नीरू माँ को तुरंत स्ट्राइक हुआ और "किसको ठेस लगी?" कहते ही अलग पड़ गया और हिमालय जैसा भोगवटा बिल्कुल शांत हो गया। नीरू माँ ने कहा, "हाँ दादा, यह तो नीरू के अहम् को ठेस लगी"।

दादा बोले, "अच्छा हुआ। ठेस लगनी ही चाहिए। ठेस लगने पर जो अहम् अंदर था वह बाहर आया, हमें दिखाई दिया, अब हम उसे निकालेंगे। लेकिन अगर बाहर ही नहीं आता तो हमें कैसे पता चलता?"

दादा ने फिर से पूछा, "नीरू बहन, हुआ क्या है? आपके अहम् को किसने ठेस पहुँचाई?" नीरू माँ ने सारी बात बताई और कहा, "लेकिन दादा, अब मुझे कुछ नहीं है, आपने बात की, तभी से खत्म हो गया है"।

दूसरे दिन वे व्यक्ति आए। सभी को गिफ्ट देने के लिए दादा अमरीका से बहुत सी घड़ी लाए थे। सब से अच्छी घड़ी उनको देते हुए नीरू माँ ने कहा, "लीजिए, दादा ने आपको यह प्रसाद दिया है"। दादा ने तो कुछ भी नहीं कहा था लेकिन नीरू माँ ने सामने से दी।

वे व्यक्ति खुश हो गए। उनके जाने के बाद बहुत प्रेम से नीरू माँ की ओर देखते हुए दादा ने कहा, "हमारे नीरू बहन ऐसे ही नोबल होने चाहिए"।

दादा हमेशा कहते, "आज तक हमने किसी भी स्त्री में नीरू बहन जैसी नोबिलिटी नहीं देखी"।

ज्ञानी विद् यूथ

नम्रता

प्रश्नकर्ता *: जहाँ अकड़ने की स्थिति हो, वहाँ नम्र रहें, उसे खानदानियत कहते हैं। ज्यों नम्रता विशेष यों खानदानियत उच्च, यह समझाइए।*

पूज्य श्री *: यह पेड़ है, उस पर फल लगे तब नीचे झुकेगा या टाइट होता जाएगा? नीचे झुकेगा। आम के पेड़ पर आम लगने लगें तो नीचे झुकेगा, डालियों का वज़न बढ़ने से नीचे झुकेगा। यानी जैसे-जैसे गुण उत्पन्न होंगे न वैसे-वैसे सब बहुत नम्र, बच्चे जैसे बन जाते हैं, यह कुदरत का नियम है। ये महान पुरुष, प्रेसिडेन्ट बनते हैं, प्राइम मिनिस्टर बनते हैं। जैसे-जैसे नम्रता बढ़ेंगी वैसे-वैसे उनको उच्च पद प्राप्त होगा। उच्च लोगों में अहंकार का उद्यम नहीं होता। मान, अधिकार, सत्ता नहीं जताते। सब से छोटा हूँ, ऐसा रखते हैं। यह सोना है, उसे जैसे मोड़ो वैसे मुड़ेगा न? और लोहा? उसे मोड़ने से मुड़ता ही नहीं। और सोने को चाहे जितना मोड़ो, लंबा करो फिर भी टूटता ही नहीं। जैसे-जैसे नम्रता बढ़ती जाएगी वैसे नम्र होते जाएँगे।*

उसका अपमान करो या नुकसान करो फिर भी वह अकड़ता नहीं और ना ही आड़ाई करता है। उसे खानदानियत कहते हैं, संस्कारी कहते हैं।

प्रश्नकर्ता *: नम्रता का गुण विकसित करने के लिए कौन सी समझ सेट करनी चाहिए?*

पूज्य श्री *: आसान रास्ता है... अगर कोई आड़ाई कर रहा हो न, तो आपको देखना चाहिए कि क्या आपने कभी ऐसी गलती की है? उसके बजाय आप चिढ़ जाते हैं कि, "यह कैसा व्यक्ति है? एक छोटा सा काम सौंपने पर इतनी आड़ाई करता है। व्यक्ति ही यूज़लेस (बेकार) है।" वह ऐसा कर रहा है और आपको अच्छा नहीं लगा तब आपको चेक करना है कि क्या मैंने कभी ऐसा किया है? लेकिन दोष नहीं निकालने हैं। आप भी कहीं पर वैसा ही करते हैं। यानी आप ऐसी गलतियाँ नहीं करेंगे तो आपका रोग निकल जाएगा। कोई सरल हो, नम्र हो, लघुता दिखा रहा हो तो आपको भी ऐसा कहना चाहिए कि "कितने अच्छे गुण हैं"। उन अच्छे गुणों को अप्रीशिएट करेंगे तो आपमें भी वे गुण प्रकट होंगे।*

नीचे दिए गए ३ चित्र में से पान्डा को ढूँढिए...

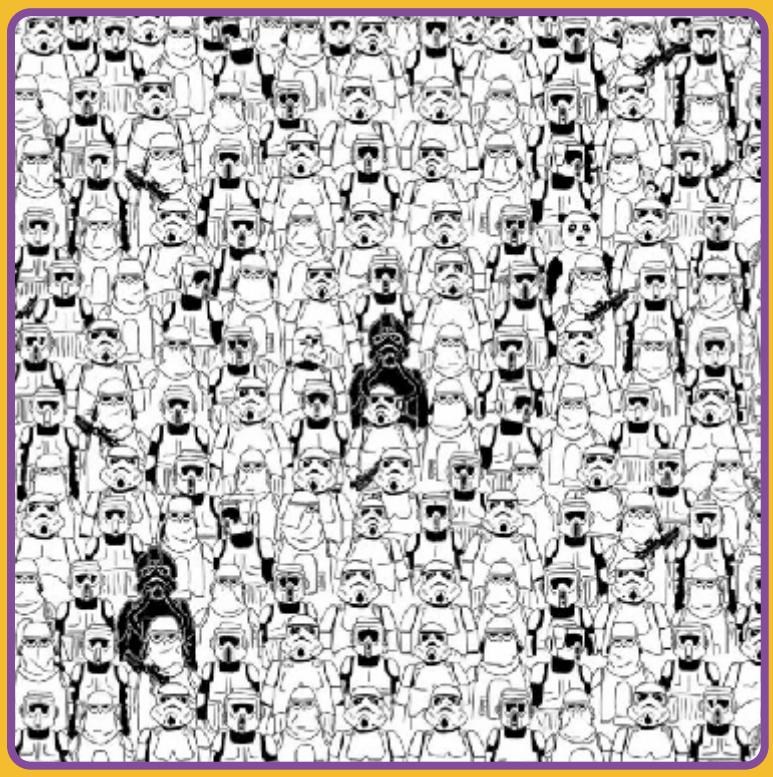

For answers- goo.gl/5Afxgt

You need to download QR Code Scanner App from Play store or iTunes Store

खानदानियत की ओर पहली पायदान

दोस्तों, पहले के ज़माने में जब रज़वाड़े (राजा लोग) थे, तब राजा को उनका कोई मंत्री या सिपाही अच्छे समाचार दे, तब राजा तुरंत अपनी माला या अँगूठी या ऐसा कुछ भी भेट में दे देते थे, एक बार भी नहीं सोचते थे कि इसकी कीमत कितनी होगी?

नीरू माँ कहते थे, बचपन से ही हमें ऐसा था, "हमारी चाहे जितनी पसंदीदा चीज़ हो लेकिन अगर कोई कहे कि, "तेरी यह चीज़ बहुत अच्छी है, तू यह कहाँ से लाई? कितने में लाई?" मुझे दिखाई देता कि उसे यह चीज़ बहुत पसंद है, तो तुरंत मैं उसे दे देती थी।"

मैं सोचती, "उसे यह चीज़ मुझसे भी ज्यादा पसंद है। अगर वह इसका इस्तेमाल करेगी तो उसे मुझसे भी ज्यादा खुशी मिलेगी। इसलिए उसकी खुशी में ही मेरी खुशी है।

बोलो दोस्तों, "कितना बड़ा मन?" "अक्रम यूथ" का यह अंक पढ़ने के बाद हम भी तय करते हैं न कि हमें भी खानदानियत (nobility) *का गुण विकसित करना चाहिए।*

तो उसके लिए आज हम पहला कदम उठाएँगे....

"खानदानियत अर्थात् अपनी पसंदीदा चीज़ प्रेम से किसी भी ज़रूरतमंद व्यक्ति को दे सके।"

चलो, आज से ही हम भी अपना पसंदीदा शर्ट, टी-शर्ट, ड्रेस वगैरह लेकर अपने घर के वॉचमैन या घरकाम करने वाले नौकर को या भिखारी को दें। उनके साथ आप फोटो लो और हमारे साथ share *करो।*

Email - akramyouth@dadabhagwan.org

Facebook - http://facebook.com/akramyouth.mag

Twitter - @AkramYouth

दिसम्बर २०१६
वर्ष : ४, अंक : ८
अखंड क्रमांक : ४४

अक्रम यूथ

"एक तो नामकर्म अच्छा होना चाहिए

और

दूसरा, भाव अच्छे होने चाहिए।"

तो हम जान जाएँगे

कि असल खानदानियत है।

- दादा भगवान

अपने प्रतिभाव और सुझाव akramyouth@dadabhagwan.org पर भेजें।
मालिक - महाविदेह फाउन्डेशन की तरफ से प्रकाशितमुद्रक और संपादक - श्री डिम्पल मेहता
अंबा ऑफसेट - पार्श्वनाथ चेम्बर्स, उस्मानपुरा, अहमदाबाद विभाग १४ से प्रकाशित की गई है।